ग्रन्थमाला ‘स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन’ : खण्ड ८

# अहं-निर्मूलनके लिए साधना

हिन्दी (Hindi)


संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले**

**श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ**

**सनातन संस्था**


**सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !**

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

# ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

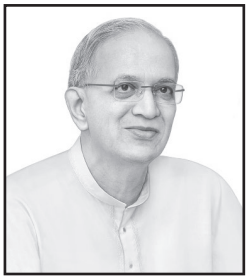

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे ३.९.२०२३ तक १२५ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४६ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

**(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)**

**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !**

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 卐 | **मुखपृष्ठ संकल्पना** | १० |
| 卐 | **भूमिका** | ११ |
| १. | ‘अहं’ शब्दकी व्याख्या एवं अर्थ | १२ |
| २. | ‘अहं’के समानार्थी शब्द | १२ |
| ३. | अहंके प्रकार (ईश्वरका अहं, मनुष्यका अहं इत्यादि) | १२ |
| ४. | स्तरानुसार अहंके प्रकार, साधना एवं जीवन | १५ |
| ५. | अहं एवं अन्य | १६ |
| ६. | अहंकी निर्मिति | १८ |
| ७. | अहंके कारण सम्भाव्य हानि एवं अहं नष्ट होनेका महत्त्व | २५ |
| ८. | अहंको घटाने हेतु साधनाके महत्त्वपूर्ण घटक (सेवा, त्याग, प्रीति (निरपेक्ष प्रेम), नामजप इत्यादि) | ३३ |
| ९. | अहंको दूर करनेके उपाय | ३८ |
| १०. | अहंके लयसे सम्बन्धित तत्त्व | ६२ |
| ११. | अहंके घटनेपर आध्यात्मिक उन्नतिके लक्षण | ६३ |
| १२. | अहं-निर्मूलन हेतु साधकोंके प्रयत्न एवं उनकी अनुभूतियां | ६४ |
| 卐 | **‘अहं-निर्मूलनके लिए साधना’ सम्बन्धी गहन ज्ञान** | ८१ |
| 卐 | **प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें !** | ८२ |
| 卐 | **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** | ८५ |


**अगस्त २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, असमिया, गुरुमुखी, सर्बियन, जर्मन, स्पैनिश, फ्रांसीसी एवं नेपाली, इन १७ भाषाओंमें ९४ लाख १८ सहस्र प्रतियां !**

# भूमिका

'अहंकारकी अगिनिमें, दहत सकल संसार ।'

सन्त गोस्वामी तुलसीदासजीकी इस उक्तिसे मनुष्यके 'मैं'पन से हानि स्पष्ट होती है । मनुष्यके ऐहिक एवं पारमार्थिक सुखके मार्गमें अहं एक बहुत बडी बाधा है । अहंका बीज मनुष्यमें जन्मसे ही होता है । इसलिए वह छोटे-बडे, निर्धन-धनवान, सुशिक्षित-अशिक्षित इत्यादि सबमें, न्यूनाधिक मात्रामें अवश्य होता है ।

अहं, खेतमें उगनेवाली घास समान है । जबतक उसे जडसहित उखाड न दिया जाए, तबतक खेतकी उपज अच्छी नहीं हो पाती । घासको निरन्तर काटते रहना आवश्यक है । उसी प्रकार, अहंको पूर्णतः नष्ट किए बिना उत्तम उपज अर्थात परमेश्वरीय कृपा सम्भव नहीं । साधनाका उद्देश्य है अहंका नाश (लय) । मनुष्यमें अहं अत्यन्त गहराईतक होता है; साधना द्वारा भी इसपर नियन्त्रण पाना सहज सम्भव नहीं होता । इसलिए यह न सोचें कि साधनासे अहं अपनेआप नष्ट हो जाएगा; अहं-निर्मूलन हेतु सतर्कतापूर्वक प्रयत्न आवश्यक हैं ।

इस ग्रन्थमें अहंकी व्याख्या, प्रकार, निर्मिति, लय इत्यादि की सैद्धान्तिक जानकारीके साथ अहंनिर्मितिके कारण, अहंसे सम्भाव्य हानि एवं उसके नष्ट होनेका महत्त्व इत्यादि जानकारी भी प्रस्तुत हैं । अहं के निराकरण हेतु, साधनाके विविध घटक एवं विविध साधनामार्गोंके अनुसार आवश्यक एवं सरल उपायोंका वर्णन है । अहं-निर्मूलनके लिए कुछ साधकोंके प्रयत्न एवं उनकी अनुभूतियां भी इस ग्रन्थमें दी गई हैं ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि ग्रन्थमें दिए अहं-निर्मूलनके प्रयत्नोंको अधिकाधिक लोग शीघ्र आचरणमें उतारकर मोक्षप्राप्ति करें । – **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सर्व खण्डोंके 'भाग १ एवं २' की संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन' के अन्तर्गत दी है ।)